

Chapter छिहत्तर

शाल्व तथा वृष्णियों के मध्य युद्ध

इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस तरह शाल्व नामक असुर ने एक विशाल तथा भयानक विमान प्राप्त किया और किस तरह इसका उपयोग द्वारका में वृष्णियों पर आक्रमण करने के लिए किया और किस तरह उस युद्ध के दौरान प्रद्युम्न को युद्धस्थल से हर लिया गया।

शाल्व उन राजाओं में से एक था, जो रुक्मिणीदेवी के विवाह के समय पराजित हुए थे। उसने तब यह प्रतिज्ञा की थी कि वह पृथ्वी पर से समस्त यादवों का सफाया कर देगा, अतः वह प्रतिदिन मुट्टी-भर धूल फाँक कर शिवजी की पूजा करने लगा। जब एक साल बीता तो शिवजी शाल्व के समक्ष प्रकट हुए और उससे वर माँगने के लिए कहा। शाल्व ने ऐसे उड़न-यंत्र का वर माँगा, जो कहीं भी जा सके और देवों, असुरों तथा मनुष्यों को भयभीत बना दे। शिवजी ने उसकी विनती मान ली और मय दानव से सौभ नामक एक उड़ता हुआ लोहे का नगर बनवाया। शाल्व यह यान लेकर द्वारका गया, जहाँ उसने अपनी विशाल सेना के साथ नगर में घेरा डाल दिया। उसने अपने विमान से द्वारका पर पेड़ों के तनों, पत्थरों तथा अन्य प्रक्षेप्यों से बमबारी की और ऐसा चक्रवात उत्पन्न कर दिया, जिसकी धूल से सब कुछ ओझल हो उठा।

जब प्रद्युम्न, सात्यकि तथा अन्य यदुवीरों ने द्वारका तथा द्वारकावासियों की दयनीय दशा देखी, तो वे शाल्व की सेना से लड़ने के लिए गये। योद्धाओं में श्रेष्ठ प्रद्युम्न ने अपने दैवी हथियारों से शाल्व का सारा भ्रामक जादू ध्वस्त कर दिया और शाल्व को भी मोहित कर दिया। इस तरह शाल्व का विमान पृथ्वी में, आकाश में तथा पर्वत की चोटियों पर निरुद्देश्य चक्कर लगाने लगा। किन्तु तब शाल्व के अनुयायी द्युमान ने प्रद्युम्न की छाती पर अपनी गदा से वार किया। प्रद्युम्न का सारथी अपने स्वामी को बुरी तरह घायल देख कर उन्हें युद्धस्थल से बाहर ले आया, किन्तु प्रद्युम्न को शीघ्र ही चेत हुआ, तो उन्होंने अपने सारथी को इस तरह के कार्य के लिए बुरी तरह से फटकारा।

श्रीशुक उवाच

अथान्यदपि कृष्णस्य शृणु कर्माद्भुतं नृप ।
क्रीडानरशरीरस्य यथा सौभपतिर्हतः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; अथ—अब; अन्यत्—दूसरा; अपि—भी; कृष्णस्य—कृष्ण का; शृणु—सुनो; कर्म—कार्य; अद्भुतम्—विचित्र; नृप—हे राजा; क्रीडा—खिलवाड़ करने के लिए; नर—मनुष्य जैसा; शरीरस्य—शरीर का; यथा—कैसे; सौभ-पतिः—सौभ का स्वामी (शाल्व); हतः—मारा गया।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे राजन्, अब उन भगवान् कृष्ण द्वारा सम्पन्न एक अन्य अद्भुत् कार्य सुनो, जो दिव्य लीलाओं का आनन्द लेने के लिए अपने मानव शरीर में प्रकट हुए। अब सुनो कि उन्होंने किस तरह सौभपति का वध किया।

शिशुपालसखः शाल्वो रुक्मिण्युद्वाह आगतः ।
यदुभिर्निर्जितः सङ्ख्ये जरासन्धादयस्तथा ॥ २ ॥

शब्दार्थ

शिशुपाल-सखः—शिशुपाल का मित्र; शाल्वः—शाल्व नामक; रुक्मिणी-उद्वाहे—रुक्मिणी के विवाह में; आगतः—आया हुआ; यदुभिः—यदुओं द्वारा; निर्जितः—परास्त; सङ्ख्ये—युद्ध में; जरासन्ध-आदयः—जरासन्ध इत्यादि; तथा—भी।

शाल्व शिशुपाल का मित्र था। जब वह रुक्मिणी के विवाह में सम्मिलित हुआ था, तो यदुवीरों ने उसे जरासन्ध तथा अन्य राजाओं समेत युद्ध में परास्त कर दिया था।

शाल्वः प्रतिज्ञामकरोच्छृण्वतां सर्वभूभुजाम् ।
अयादवां क्ष्मां करिष्ये पौरुषं मम पश्यत ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

शाल्वः—शाल्व ने; प्रतिज्ञाम्—प्रतिज्ञा; अकरोत्—की; शृण्वताम्—सुनते हुए; सर्व—सभी; भू-भुजाम्—राजाओं के; अयादवाम्—यादवों से विहीन; क्ष्माम्—पृथ्वी को; करिष्ये—करूँगा; पौरुषम्—पराक्रम; मम—मेरा; पश्यत—जरा देखो।

शाल्व ने समस्त राजाओं के समक्ष प्रतिज्ञा की, “मैं पृथ्वी को यादवों से विहीन कर दूँगा।

जरा मेरे पराक्रम को देखो।”

इति मूढः प्रतिज्ञाय देवं पशुपतिं प्रभुम् ।
आराधयामास नृपः पांशुमुष्टिं सकृद्ग्रसन् ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

इति—इन शब्दों से; मूढः—मूर्ख ने; प्रतिज्ञाय—प्रतिज्ञा करके; देवम्—स्वामी; पशु-पतिम्—पशु सदृश पुरुषों के रक्षक, शिव को; प्रभुम्—अपने स्वामी; आरधयाम् आस—पूजा की; नृपः—राजा; पांशु—धूल की; मुष्टिम्—मुट्टी; सकृत्—एक बार (नित्य ही); ग्रसन्—खाते हुए ।

यह प्रतिज्ञा कर चुकने के बाद वह मूर्ख राजा प्रतिदिन मात्र एक मुट्टी धूल फाँक कर भगवान् पशुपति (शिव) की पूजा करने लगा ।

संवत्सरान्ते भगवानाशुतोष उमापतिः ।

वरेण च्छन्दयामास शाल्वं शरणमागतम् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

संवत्सर—एक वर्ष के; अन्ते—अन्त में; भगवान्—भगवान्; आशु-तोषः—तुरन्त प्रसन्न होने वाले; उमा-पतिः—उमा के पति; वरेण—वर से; छन्दयाम् आस—चुनने के लिए; शाल्वम्—शाल्व को; शरणम्—शरण लेने के लिए; आगतम्—आया हुआ ।

भगवान् उमापति शीघ्र प्रसन्न होने वाले अर्थात् आशुतोष कहलाते हैं, फिर भी उन्होंने अपनी शरण में आये शाल्व को एक वर्ष के बाद ही यह कह कर तुष्ट किया कि तुम जो वर चाहो माँग सकते हो ।

तात्पर्य : शाल्व ने आशुतोष नाम से विख्यात शिवजी की पूजा की । फिर भी शिवजी पूरे एक वर्ष तक उसके समझ नहीं आये क्योंकि भगवान् अर्थात् सर्वज्ञ और महान् होने के नाते वे जान गये थे कि भगवान् कृष्ण के शत्रु को दिया गया कोई भी वर निष्फल होगा तो भी जैसाकि शरणम् आगतम् शब्दों से विदित होता है, शाल्व शिवजी की शरण में आया था और प्रामाणिक नियम को बनाये रखने के लिए कि पूजा करने वाले को वर मिलना ही चाहिए इस दृष्टि से शिवजी ने शाल्व को एक वर दिया ।

देवासुरमनुष्याणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।

अभेद्यं कामगं वद्रे स यानं वृष्णिभीषणम् ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

देव—देवताओं द्वारा; असुर—असुरों; मनुष्याणाम्—तथा मनुष्यों को; गन्धर्व—गन्धर्वों द्वारा; उरग—दैवी सर्प; रक्षसाम्—तथा राक्षसगण को; अभेद्यम्—नष्ट न किया जा सकने वाला; काम—इच्छानुसार; गम्—भ्रमण करते हुए; वद्रे—चुना; सः—उसने; यानम्—सवारी, यान; वृष्णि—वृष्णियों को; भीषणम्—भयभीत बनाने के लिए ।

शाल्व ने ऐसा यान चुना, जो न तो देवताओं, असुरों, मनुष्यों, गन्धर्वों, उरगों और न ही राक्षसों द्वारा नष्ट किया जा सके और जो उसकी इच्छानुसार कहीं भी यात्रा करा सके और वृष्णियों को भयभीत करा सके ।

तथेति गिरिशादिष्टो मयः परपुरंजयः ।

पुरं निर्माय शाल्वाय प्रादात्सौभमयस्मयम् ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

तथा—ऐसा ही हो; इति—ऐसा कहने के बाद; गिरि-श—शिव द्वारा; आदिष्टः—आदेश दिया; मयः—मय दानव; पर—शत्रु के; पुरम्—नगरों को; जयः—जीतने वाला; पुरम्—नगर; निर्माय—बनाने के लिए; शाल्वाय—शाल्व के लिए; प्रादात्—दिया; सौभम्—सौभ नामक; अयः—लोहे का; मयम्—निर्मित।

शिवजी ने कहा, “ऐसा ही हो।” उनके आदेश पर अपने शत्रुओं के नगरों को जीत लेने वाले मय दानव ने एक लोहे की उड़न नगरी बनाई, जिसका नाम सौभ था और लाकर शाल्व को भेंट कर दी।

स लब्ध्वा कामगं यानं तमोधाम दुरासदम् ।

ययस्द्वारवतीं शाल्वो वैरं वृष्णि कृतं स्मरन् ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

सः—वह; लब्ध्वा—प्राप्त करके; काम-गम्—इच्छानुसार भ्रमण करने वाला; यानम्—यान को; तमः—अंधकार का; धाम—घर; दुरासदम्—जहाँ पहुँचा न जा सके; ययौ—गया; द्वारवतीम्—द्वारका; शाल्वः—शाल्व; वैरम्—शत्रुता; वृष्णि-कृतम्—वृष्णियों द्वारा की गई; स्मरन्—स्मरण करते हुए।

यह दुर्दम्य यान अंधकार से पूर्ण था और कहीं भी जा सकता था। इसे प्राप्त करने पर शाल्व अपने प्रति वृष्णियों की शत्रुता स्मरण करते हुए द्वारका गया।

निरुध्य सेनया शाल्वो महत्या भरतर्षभ ।

पुरीं बभञ्जोपवनानुद्यानानि च सर्वशः ॥ ९ ॥

सगोपुराणि द्वाराणि प्रासादाद्वालतोलिकाः ।

विहारान्स विमानाच्छयान्निपेतुः शस्त्रवृष्टयः ॥ १० ॥

शिलाद्रुमाश्चाशनयः सर्पा आसारशर्कराः ।

प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूद्रजसाच्छादिता दिशः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

निरुध्य—घेरा डाल कर; सेनया—सेना के साथ; शाल्वः—शाल्व; महत्या—महान्; भरत-ऋषभ—हे भरत-श्रेष्ठ; पुरीम्—नगर को; बभञ्ज—तोड़ डाला; उपवनान्—वाटिकाओं को; उद्यानानि—बगीचे; च—तथा; सर्वशः—चारों ओर; स-गोपुराणि—बुर्जियों समेत; द्वाराणि—तथा द्वार; प्रासाद—महल; अद्वाल—अटारियाँ; तोलिकाः—तथा चार दीवारियाँ; विहारान्—मनोरंजन के स्थलों को; सः—वह, शाल्व; विमान—हवाईजहाज से; अश्यात्—सर्वश्रेष्ठ; निपेतुः—गिराया; शस्त्र—हथियारों की; वृष्टयः—वर्षा; शिला—पत्थर; रुमाः—तथा वृक्ष; च—भी; अशनयः—वज्र; सर्पाः—सर्प; आसार-शर्कराः—तथा ओले; प्रचण्डः—भयानक; चक्रवातः—बवण्डर; अभूत्—उठा; रजसा—धूल से; आच्छादिताः—ढकी हुई; दिशः—समस्त दिशाएँ।

हे भरतश्रेष्ठ, शाल्व ने विशाल सेना के साथ नगर को घेर लिया और बाहरी वाटिकाओं तथा उद्यानों, अद्वालिकाओं समेत महलों, गोपुरों तथा चार दीवारियों के साथ साथ सार्वजनिक

मनोरंजन स्थलों को भी ध्वस्त कर दिया। उसने अपने इस उत्कृष्ट यान से पत्थरों, वृक्ष के तनों, वज्रों, सर्पों, ओलों इत्यादि हथियारों की वर्षा की। एक भीषण बवण्डर उठ खड़ा हुआ और उसने धूल से सारी दिशाओं को ओझल बना दिया।

इत्यर्द्यमाना सौभेन कृष्णस्य नगरी भृशम् ।
नाभ्यपद्यत शं राजंस्त्रिपुरेण यथा मही ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

इति—इस प्रकार; अर्द्यमाना—सतायी हुई; सौभेन—सौभ नामक विमान से; कृष्णस्य—कृष्ण की; नगरी—पुरी; भृशम्—बुरी तरह से; न अभ्यपद्यत—नहीं पा सका; शम्—शान्ति; राजन्—हे राजन्; त्रि-पुरेण—असुरों की तीन हवाई-नगरियों द्वारा; यथा—जिस तरह; मही—पृथ्वी।

हे राजन्, इस तरह सौभ विमान द्वारा बुरी तरह सताये जाने से कृष्ण की पुरी में अमन-चैन नहीं रहा, जिस तरह असुरों की तीन हवाई-नगरियों द्वारा आक्रमण किये जाने पर पृथ्वी अशान्त हो गई थी।

प्रद्युम्नो भगवान्वीक्ष्य बाध्यमाना निजाः प्रजाः ।
म भैष्टेत्यभ्यधाद्वीरो रथारूढो महायशाः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

प्रद्युम्नः—प्रद्युम्न; भगवान्—भगवान्; वीक्ष्य—देख कर; बाध्यमानाः—सताया जाकर; निजाः—अपनी; प्रजाः—प्रजा; मा भैष्ट—मत डरो; इति—इस प्रकार; अभ्यधात्—सम्बोधित किये गये; वीरः—महान् वीर; रथ—अपने रथ पर; आरूढः—सवार हुआ; महा—महान्; यशाः—कीर्ति वाला।

अपनी प्रजा को इस प्रकार सताई जाते देखकर यशस्वी तथा वीर भगवान् प्रद्युम्न ने उनसे इस प्रकार कहा, “डरो मत” तथा वह अपने रथ पर सवार हो गया।

सात्यकिश्चारुदेष्णश्च साम्बोऽक्रूरः सहानुजः ।
हार्दिक्यो भानुविन्दश्च गदश्च शुकसारणौ ॥ १४ ॥
अपरे च महेष्वासा रथयूथपयूथपाः ।
निर्ययुर्दंशिता गुप्ता रथेभाश्चपदातिभिः ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

सात्यकिः चारुदेष्णः च—सात्यकि तथा चारुदेष्ण; साम्बः—साम्ब; अक्रूरः—एवं अक्रूर; सह—साथ; अनुजः—छोटे भाई; हार्दिक्यः—हार्दिक्य; भानुविन्दः—भानुविन्द; च—तथा; गदः—गद; च—तथा; शुक-सारणौ—शुक एवं सारण; अपरे—अन्य; च—भी; महा—प्रमुख; इष्-आसाः—धनुर्धर; रथ—रथ के (योद्धा); यूथ-प—नेताओं के; यूथ-पाः—नेता; निर्ययुः—बाहर चले गये; दंशिताः—कवच धारण किये; गुप्ताः—सुरक्षित; रथ—रथों (पर सवार सैनिकों) द्वारा; इभ—हाथियों; अश्व—तथा घोड़ों; पदातिभिः—तथा पैदल सैनिकों से।

रथियों के प्रमुख सेनापति यथा सात्यकि, चारुदेष्ण, साम्ब, अक्रूर तथा उसके छोटे भाई और उनके साथ ही हार्दिक्य, भानुविन्द, गद, शुक तथा सारण अनेक अन्य प्रमुख धनुर्धरों के साथ कवच धारण करके तथा रथों, हाथियों और घोड़ों पर सवार सैनिकों एवं पैदल सिपाहियों की टुकड़ियों से सुरक्षित होकर नगर से बाहर आ गये।

ततः प्रवृते युद्धं शाल्वानां यदुभिः सह ।
यथासुराणां विबुधैस्तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

ततः—तब; प्रवृते—शुरू कर दिया; युद्धम्—युद्ध; शाल्वानाम्—शाल्व के अनुयायियों का; यदुभिः सह—यदुओं के साथ; यथा—जिस तरह; असुराणाम्—असुरों का; विबुधैः—देवताओं के साथ; तुमुलम्—घनघोर; लोम-हर्षणम्—रोंगटे खड़ा करने वाला।

तब शाल्व की सेनाओं तथा यदुओं के बीच रोंगटे खड़ा कर देने वाला भीषण युद्ध प्रारम्भ हुआ। यह असुरों तथा देवताओं के मध्य हुए महान् युद्ध के तुल्य था।

ताश्च सौभपतेर्माया दिव्यास्त्रै रुक्मिणीसुतः ।
क्षणेन नाशयामास नैशं तम इवोष्णागुः ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

ताः—वे; च—तथा; सौभ-पतेः—सौभ के स्वामी की; मायाः—जादुई माया; दिव्य—दैवी; अस्त्रैः—हथियारों से; रुक्मिणी-सुतः—रुक्मिणी-पुत्र (प्रद्युम्न); क्षणेन—क्षण में; नाशयाम् आस—नष्ट कर दिया; नैशम्—रात्रि का; तमः—अंधकार; इव—सदृश; उष्ण—गर्म; गुः—जिसकी किरणें (सूर्य)।

प्रद्युम्न ने अपने दैवी हथियारों से शाल्व की सारी माया को क्षण-भर में उसी तरह नष्ट कर दिया, जिस तरह सूर्य की तप्त किरणें रात्रि के अँधेरे को दूर कर देती हैं।

विव्याध पञ्चविंशत्या स्वर्णपुङ्खैरयोमुखैः ।
शाल्वस्य ध्वजिनीपालं शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १८ ॥
शतेनाताडयच्छाल्वमेकैकेनास्य सैनिकान् ।
दशभिर्दशभिर्नेतृन्वाहनानि त्रिभिस्त्रिभिः ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

विव्याध—चलाया; पञ्च—पाँच; विंशत्या—बीस; स्वर्ण—सोना; पुङ्खैः—जिनके पुछल्ले; अयः—लोहा के; मुखैः—जिनके सिरे; शाल्वस्य—शाल्व का; ध्वजिनी-पालम्—प्रधान सेनापति; शरैः—तीरों से; सन्नत—समतल; पर्वभिः—जोड़ों से; शतेन—एक सौ; अताडयत्—प्रहार किया; शाल्वम्—शाल्व को; एक-एकेन—प्रत्येक को एक-एक से; अस्य—उसका; सैनिकान्—सिपाही; दशभिः दशभिः—दस-दस करके; नेतृन्—रथ हाँकने वाले; वाहनानि—वाहनों को; त्रिभिः त्रिभिः—प्रत्येक को तीन-तीन से।

प्रद्युम्न के सारे तीरों के पुछल्ले सोने के, सिरि लोहे के तथा जोड़ एकदम सपाट थे। उसने पच्चीस तीरों से शाल्व के प्रधान सेनापति द्युमान् को मार गिराया और एक सौ तीरों से शाल्व पर प्रहार किया। फिर उसने शाल्व के हर अधिकारी को एक-एक तीर से, सारथियों में से प्रत्येक को दस-दस तीरों से तथा उसके घोड़ों एवं अन्य वाहनों को तीन-तीन बाणों से बेध डाला।

तद्द्भुतं महत्कर्म प्रद्युम्नस्य महात्मनः ।

दृष्ट्वा तं पूजयामासुः सर्वे स्वपरसैनिकाः ॥ २० ॥

शब्दार्थ

तत्—उस; अद्भुतम्—चकित करने वाले; महत्—बलशाली; कर्म—कर्तब; प्रद्युम्नस्य—प्रद्युम्न का; महा-आत्मनः—महापुरुष; दृष्ट्वा—देखकर; तम्—उसको; पूजयाम् आसुः—आदर-सम्मान किया; सर्वे—सभी; स्व—अपने पक्ष के; पर—तथा शत्रु पक्ष के; सैनिकाः—सिपाही।

जब उन्होंने यशस्वी प्रद्युम्न को वह चकित करने वाला तथा बलशाली ऐसा करतब करते देखा, तो दोनों पक्षों के सैनिकों ने उसकी प्रशंसा की।

बहुरूपैकरूपं तद्दृश्यते न च दृश्यते ।

मायामयं मयकृतं दुर्विभाव्यं परैरभूत् ॥ २१ ॥

शब्दार्थ

बहु—अनेक; रूप—रूपों के साथ; एक—एक; रूपम्—रूप के साथ; तत्—वह (सौभ विमान); दृश्यते—दिखाई पड़ता है; न—नहीं; च—तथा; दृश्यते—दिखता है; माया-मयम्—जादूमय; मय—मय दानव द्वारा; कृतम्—बनाया गया; दुर्विभाव्यम्—दुँढ़ पाना कठिन; परैः—शत्रु (यादवों) द्वारा; अभूत्—बन गया।

मय दानव द्वारा निर्मित यह मायावी विमान एक क्षण अनेक एक जैसे रूपों में प्रकट होता और दूसरे क्षण पुनः केवल एक रूप में दिखता। कभी यह दिखता और कभी नहीं दिखता था। इस तरह शाल्व के विरोधी यह निश्चित नहीं कर पाते थे कि वह कहाँ है।

क्वचिद्भूमौ क्वचिद्व्योम्नि गिरिमूर्ध्नि जले क्वचित् ।

अलातचक्रवद्भ्राम्यत्सौभं तद्दुरवस्थितम् ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

क्वचित्—एक क्षण में; भूमौ—पृथ्वी पर; क्वचित्—एक क्षण में; व्योम्नि—आकाश में; गिरि—पर्वत की; मूर्ध्नि—चोटी पर; जले—जल में; क्वचित्—कभी; अलात-चक्र—आग का गोला; वत्—सदृश; भ्राम्यत्—घूमते हुए; सौभम्—सौभ को; तत्—उस; दुरवस्थितम्—कभी एक स्थान में न रहते हुए।

एक क्षण से दूसरे क्षण में सौभ विमान पृथ्वी में, आकाश में, पर्वत की चोटी पर या जल में दिखता था। घूमते हुए अग्नि-पुंज की तरह वह कभी एक स्थान पर नहीं टिकता था।

यत्र यत्रोपलक्ष्येत ससौभः सहसैनिकः ।

शाल्वस्ततस्ततोऽमुञ्चञ्छरान्सात्वतयूथपाः ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

यत्र यत्र—जहाँ जहाँ; उपलक्ष्येत—दिखता; स-सौभः—सौभ के साथ; सह-सैनिकः—अपने सिपाहियों के साथ; शाल्वः—शाल्व; ततः ततः—वहाँ वहाँ; अमुञ्चन्—छोड़ा, चलाया; शरान्—अपने बाणों को; सात्वत—यदुओं के; यूथ-पाः—सेना के प्रधानों ने।

शाल्व जहाँ जहाँ अपने सौभ यान तथा अपनी सेना के साथ प्रकट होता, वहाँ वहाँ यदु-सेनापति अपने बाण छोड़ते।

शरैरग्न्यर्कसंस्पर्शैराशीविषदुरासदैः ।

पीड्यमानपुरानीकः शाल्वोऽमुह्यत्परेरितैः ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

शरैः—बाणों से; अग्नि—अग्नि के समान; अर्क—तथा सूर्य के समान; संस्पर्शैः—स्पर्श से; आशी—सर्प के; विष—विष की तरह; दुरासदैः—असह्य; पीड्यमान—पीड़ित; पुर—वायव-पुरी; अनीकः—तथा जिसकी सेना; शाल्वः—शाल्व; अमुह्यत्—मोहित हो गया; पर—शत्रु द्वारा; ईरितैः—चलाया या छोड़ा गया।

अपने शत्रु के बाणों से त्रस्त हो रही अपनी सेना तथा वायव-पुरी को देखकर शाल्व मोहग्रस्त हो गया, क्योंकि शत्रु के बाण अग्नि तथा सूर्य की तरह प्रहार कर रहे थे और सर्प-विष की तरह असह्य हो रहे थे।

तात्पर्य : श्रील श्रीधर स्वामी बतलाते हैं कि यदु-सेनापतियों के बाण अग्नि की तरह जल रहे थे, चारों ओर से सूर्य की किरणों के समान प्रहार कर रहे थे और सर्प-विष की तरह एक ही बार स्पर्श करने पर प्राणघातक थे।

शाल्वानीकपशस्त्रौघैर्वृष्णिवीरा भृशार्दिताः ।

न तत्यजू रणं स्वं स्वं लोकद्वयजिगीषवः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

शाल्व—शाल्व की; अनीक-प—सेना के नायकों के; शस्त्र—हथियारों की; औघैः—बाढ़ से; वृष्णि-वीराः—वृष्णि-कुल के वीर; भृश—अत्यन्त; अर्दिताः—पीड़ित; न तत्यजूः—नहीं छोड़ा; रणम्—युद्धभूमि में नियत स्थानों को; स्वम् स्वम्—अपने अपने; लोक—लोक; द्वय—दो; जिगीषवः—जीतने की इच्छा करते हुए।

चूँकि वृष्णि-कुल के वीरगण इस जगत में तथा अगले लोक में विजय पाने के लिए उत्सुक थे, इसलिए उन्होंने रणभूमि में अपने नियत स्थानों का परित्याग नहीं किया, यद्यपि शाल्व के सेनापतियों द्वारा चलाये गये हथियारों की वर्षा से उन्हें त्रास हो रहा था।

तात्पर्य : श्रील प्रभुपाद लिखते हैं, “यदुकुल के वीर युद्धभूमि में प्राण गँवाने या विजय प्राप्त करने के लिए कृतसंकल्प थे। उन्हें विश्वास था कि यदि वे लड़ते हुए मरेंगे तो उन्हें स्वर्गलोक की प्राप्ति होगी और यदि वे विजयी हुए तो इस संसार का भोग करेंगे।”

शाल्वामात्यो द्युमान्नाम प्रद्युम्नं प्रक्प्रपीडितः ।

आसाद्य गदया मौर्व्या व्याहृत्य व्यनदद्वली ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

शाल्व-अमात्यः—शाल्व का मंत्री; द्युमान् नाम—जिसका नाम द्युमान् था; प्रद्युम्नम्—प्रद्युम्न को; प्राक्—पहले; प्रपीडितः—आघात किया था; आसाद्य—सामना करते हुए; गदया—अपनी गदा से; मौर्व्या—लोहे से बनी; व्याहृत्य—प्रहार करके; व्यनदत्—गर्जना की; बली—शक्तिशाली ।

शाल्व का मंत्री द्युमान्, जो इसके पूर्व श्री प्रद्युम्न द्वारा घायल कर दिया गया था, अब जोर से गरजता हुआ उनके पास आया और उसने उन पर काले इस्पात की बनी अपनी गदा से प्रहार किया ।

प्रद्युम्नं गदया सीर्णवक्षःस्थलमरिंदमम् ।

अपोवाह रणात्सूतो धर्मविदारुकात्मजः ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

प्रद्युम्नम्—प्रद्युम्न को; गदया—गदा से; शीर्ण—क्षत-विक्षत; वक्षः-स्थलम्—छाती; अरिम्—शत्रुओं के; दमम्—दमनकर्ता ने; अपोवाह—हटा लिया; रणात्—युद्धक्षेत्र से; सूतः—अपना सारथी; धर्म—अपने धर्म के; वित्—जानकार; दारुक-आत्मजः—दारुक-पुत्र (कृष्ण का सारथी) ।

प्रद्युम्न के सारथी दारुक-पुत्र ने सोचा कि उसके वीर स्वामी की छाती गदा से क्षत-विक्षत हो चुकी है, अतः उसने अपने धार्मिक कर्तव्य को भलीभाँति जानते हुए प्रद्युम्न को युद्धभूमि से हटा लिया ।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती बतलाते हैं कि प्रद्युम्न का शरीर सच्चिदानन्द स्वरूप था, जो कभी भी संसारी हथियारों से घायल नहीं हो सकता था। किन्तु दारुक का पुत्र भगवान् का महान् भक्त था और प्रगाढ़ प्रेम के कारण अपने स्वामी को विपत्ति में जान कर उसने उन्हें युद्धक्षेत्र से हटा दिया ।

श्रील प्रभुपाद लिखते हैं, “शाल्व के सेनापति का नाम द्युमान् था। वह अत्यन्त बलवान था और यद्यपि वह प्रद्युम्न के पच्चीस बाणों का मजा चख चुका था किन्तु उसने सहसा अपनी भयानक गदा से प्रद्युम्न पर आक्रमण कर दिया और इतनी तेजी से प्रहार किया कि प्रद्युम्न अचेत हो गया। तुरन्त ही

गर्जना हुई, “अब वह मर गया! अब वह मर गया!” गदा का प्रहार प्रद्युम्न की छाती पर इतना गम्भीर था कि उससे सामान्य व्यक्ति की छाती क्षत-विक्षत हो जाती।”

लब्धसम्भो मुहूर्तेन कार्ष्णिः सारथिमब्रवीत् ।
अहो असाध्विदं सूत यद्रणान्मेऽपसर्पणम् ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

लब्ध—प्राप्त करके; संज्ञः—होश; मुहूर्तेन—क्षण-भर में; कार्ष्णिः—कृष्ण के पुत्र ने; सारथिम्—सारथी से; अब्रवीत्—कहा; अहो—ओह; असाधु—अनुचित; इदम्—यह; सूत—हे सारथी; यत्—जो; रणात्—युद्धभूमि से; मे—मेरा; अपसर्पणम्—ले जाया गया हुआ।

तुरन्त ही होश आने पर भगवान् कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न ने अपने सारथी से कहा, “हे सारथी, यह निन्दनीय है कि तुम मुझे युद्धक्षेत्र से हटा लाये हो।”

न यदूनां कुले जातः श्रूयते रणविच्युतः ।
विना मत्क्लीबचित्तेन सूतेन प्राप्तकिल्बिषात् ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

न—नहीं; यदूनाम्—यदुओं के; कुले—परिवार में; जातः—उत्पन्न; श्रूयते—सुना जाता है; रण—युद्धक्षेत्र से; विच्युतः—परित्यक्त; विना—के अलावा; मत्—मुझको; क्लीब—नपुंसक की तरह; चित्तेन—जिसकी मनोवृत्ति; सूतेन—सारथी के कारण; प्राप्त—पाया हुआ; किल्बिषात्—दाग।

“मेरे अतिरिक्त यदुवंश के जन्मे किसी ने कभी युद्धभूमि का परित्याग नहीं किया। अब तो मेरी ख्याति एक सारथी द्वारा कलंकित हो चुकी है, जो एक नपुंसक की तरह सोचता है।”

किं नु वक्ष्येऽभिसङ्गम्य पितरौ रामकेशवौ ।
युद्धात्सम्यगपक्रान्तः पृष्ठस्तत्रात्मनः क्षमम् ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

किम्—क्या; नु—तब; वक्ष्ये—कहूँगा; अभिसङ्गम्य—भेंट करके; पितरौ—अपने दोनों पिताओं से; राम-केशवौ—बलराम तथा कृष्ण; युद्धात्—युद्ध से; सम्यक्—सर्वथा; अपक्रान्तः—भागा हुआ; पृष्ठः—पूछे जाने पर; तत्र—उस अवस्था में; आत्मनः—अपने; क्षमम्—योग्य।

मैं अपने पिता-द्वय राम तथा केशव से क्या कहूँगा, जब युद्ध से यों ही भाग कर मैं उनके पास वापस जाऊँगा? मैं उनसे क्या कह पाऊँगा, जो मेरी प्रतिष्ठा के अनुरूप हो?

तात्पर्य : श्री प्रद्युम्न ने यहाँ पर पितरौ शब्द का प्रयोग यो ही गलती से किया है। भगवान् बलराम तो उनके ताऊ थे।

व्यक्तं मे कथयिष्यन्ति हसन्त्यो भ्रातृजामयः ।
क्लैब्यं कथं कथं वीर तवान्यैः कथ्यतां मृधे ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

व्यक्तम्—निश्चय ही; मे—मेरी; कथयिष्यन्ति—कहेंगे; हसन्त्यः—हँस हँस कर; भ्रातृ-जामयः—भाभियाँ; क्लैब्यम्—क्लीवता; कथम्—कैसे; कथम्—कैसे; वीर—हे वीर; तव—तुम्हारा; अन्यैः—तुम्हारे शत्रुओं द्वारा; कथ्यताम्—बतलाओ; मृधे—युद्ध में।

“निश्चय ही मेरी भाभियाँ मुझ पर हँसेंगी और कहेंगी, “हे वीर, हमें यह तो बताओ कि किस तरह इस संसार में तुम्हारे शत्रुओं ने तुम्हें युद्ध में ऐसा कायर बना दिया।”

सारथिरुवाच

धर्मं विजानतायुष्मन्कृतमेतन्मया विभो ।
सूतः कृच्छ्रगतं रक्षेद्रथिनं सारथिं रथी ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

सारथिः उवाच—सारथी ने कहा; धर्मम्—धर्म द्वारा संस्तुत; विजानता—अच्छी तरह जानने वाले के द्वारा; आयुः-मन्—हे दीर्घजीवी; कृतम्—किया गया; एतत्—यह; मया—मेरे द्वारा; विभो—हे प्रभु; सूतः—सारथी; कृच्छ्र—कठिनाई में; गतम्—गया हुआ; रक्षेत्—रक्षा करनी चाहिए; रथिनम्—रथ के स्वामी की; सारथिम्—अपने सारथी को; रथी—रथ का स्वामी।

सारथी ने उत्तर दिया : हे दीर्घायु, मैंने अपने निर्दिष्ट कर्तव्य को अच्छी तरह जानते हुए ही ऐसा किया है। हे प्रभु, सारथी को चाहिए कि जब उसका स्वामी संकट में हो, तो उसकी रक्षा करे और स्वामी को भी चाहिए कि वह अपने सारथी की रक्षा करे।

एतद्विदित्वा तु भवान्मयापोवाहितो रणात् ।
उपसृष्टः परेणेति मूर्च्छितो गदया हतः ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

एतत्—यह; विदित्वा—जान कर; तु—निस्सन्देह; भवान्—आप; मया—मेरे द्वारा; अपोवाहितः—हटाये गये; रणात्—युद्धभूमि से; उपसृष्टः—चोट खाये; परेण—शत्रु द्वारा; इति—इस तरह सोचते हुए; मूर्च्छितः—बेहोश; गदया—अपनी गदा से; हतः—प्रहार किया हुआ।

इस नियम को मन में रखते हुए मैंने आपको युद्धस्थल से हटा लिया, क्योंकि आप अपने शत्रु की गदा से आहत होकर बेहोश हो गये थे और मैंने सोचा कि आप बुरी तरह से घायल हैं।

इस तरह श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत “शाल्व तथा वृष्णियों के मध्य युद्ध” नामक छिहत्तरवें अध्याय के श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।